आषाढ़ शुक्ल पक्ष पंचमी 09:24 तक उपरांत षष्ठी विक्रम संवत 2082

लखनऊ, बरेली, मुरादाबाद, हल्द्वानी, अयोध्या व कानपुर से प्रकाशित

सोमवार, 30 जून 2025
वर्ष 6, अंक 220, पृष्ठ 14
2 राज्य, 6 संस्करण
मूल्य 6 रुपये

अमृत विचार
बरेली
एक सम्पूर्ण अखबार

कलयुग की यशोधरा : बीस बरस बाद लौटा नरेश तो माता-पिता भी उसे सौंप दिए

कार्यालय संवाददाता, बरेली

● रिद्धिमा के सभागार में कलाकारों ने नाटक का किया मंचन

रिद्धिमा के सभागार में नाटक का मंचन करते कलाकार। ● अमृत विचार

अमृत विचार: एसआरएमएस रिद्धिमा के सभागार में रविवार शाम पारिवारिक नाटक कलयुग की यशोधरा का मंचन हुआ।

यशोधरा और सिद्धार्थ की कहानी से प्रेरित इस नाटक की मुख्य पात्र नताशा है। परिवार में पति नरेश, बच्चे प्रखर, दक्षिता और सास-ससुर हैं। नरेश घर छोड़ कर चला जाता है। नरेश के जाने की बात नताशा सास-ससुर को बताती है तो वे नताशा को ही दोषी बताते हैं। नताशा की सहेली स्नेहा उसे हिम्मत देती है और सिलाई करने के प्रेरित करती है। स्नेहा के पास टेलरिंग का डिप्लोमा भी है। इसी तरह संघर्ष करते हुए बीस साल निकल जाते हैं। नताशा बेटी दक्षिता की शादी तय करती है। घर में वैवाहिक मंगल गीत चल रहे हैं, तभी नरेश अचानक आ जाता है। नताशा उसे देखकर स्तब्ध हो जाती है, लेकिन माता-पिता खुश होते हैं। प्रखर और दक्षिता भी अपने पिता को नहीं पहचान पाते। नरेश की मां नताशा को कहती हैं कि वह कितने शुभ दिन पर यहां आया है। पिता नरेश से कन्या दान को कहते हैं, लेकिन दक्षिता कन्यादान नहीं कराना चाहती। नताशा पति से वापस आने का कारण पूछती है पर उसके पास कोई उत्तर नहीं। नरेश वापस जाने लगता है, तब नताशा उसे रोक कर कहती है कि जैसे यशोधरा के दरवाजे से सिद्धार्थ खाली हाथ वापस नहीं गया था, उसी तरह तुम भी खाली हाथ वापस नहीं जाओगे और नरेश के माता-पिता को उसे सौंप देती है। यहीं पर नाटक समाप्त हुआ। डॉ. रचना गुप्ता लिखित कहानी कलयुग की यशोधरा का नाट्य रूपांतरण डॉ. प्रभाकर गुप्ता और अश्वनी कुमार ने और निर्देशन विनायक कुमार श्रीवास्तव ने किया। नाटक में सोनालिका सक्सेना ने (नताशा), मनोज शर्मा ने (नरेश) की भूमिका निभाई। चेयरमैन देव मूर्ति, आशा मूर्ति, ऋचा मूर्ति, सुभाष मेहरा, डॉ. प्रभाकर गुप्ता, डॉ. अनुज कुमार, डॉ. शैलेश सक्सेना मौजूद रहे।